चार्ज–डिस्चार्ज

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

बैटरी के डिस्चार्ज हो जाने पर उसे चार्ज करने की आवश्यकता पड़ती है। चार्ज करने से बैटरी में पुनः ऊर्जा आ जाती है और वह कार्य करने लगती है। उसमें प्लस और माइनस दो होते हैं दोनों के माध्यम से चार्जिंग होती है। यह हमारे अनुभव और चिंतन से जुड़ा हुआ है। हमने भूतकाल में जीवन में जो कुछ चार्ज किया है, जो कुछ अर्जित किया है उसी का परिणाम वर्तमान जीवन है। वर्तमान में इसे डिस्चार्ज किये बिना मुक्ति नहीं मिल सकती।

चार्ज एवं डिस्चार्ज एक–दूसरे के पूरक हैं। चार्ज बिना डिस्चार्ज नहीं होता और डिस्चार्ज बिना चार्ज नहीं होता। जीवन में भी चार्ज और डिस्चार्ज माता–पिता के संयोग से एक नये जीव की उत्पत्ति से होती है। जन्म के बाद चार्ज एवं डिस्चार्ज चालू हो जाता है। दर्शन, मोह ही चार्ज मोह है और चारित्र मोह डिस्चार्ज मोह है। पानी को दर्शन मोह और बर्फ को चारित्र मोह कह सकते हैं। जैसे ही चेतन किसी जड़ का स्पर्श करता है तो उसे अपने स्वरूप का ज्ञान होता है। इसमें वह चार्ज होता है।

जिस चीज को हम बहुत याद करते हैं उसमें हम तन्मयाकार हो जाते हैं। इसी से वह चार्ज हुआ करता है। उसकी याद बहुत आती है जिस पर बहुत राग या द्वेष होता है। जो डिस्चार्ज हो रहा है यदि व्यक्ति उस पर राग–द्वेष करता है तो उस समय आत्मा की स्वाभाविक कल्पना शक्ति वैभाविक रूप से विकल्प होकर उसमें मिल जाती है और उसी से वह चार्ज हुआ करती है। इसी से संसार का क्रम चल रहा है।

एक उदाहरण के द्वारा इस प्रसंग को हम समझते हैं। किसी दुकान पर एक साड़ी खरीदने के लिए कोई औरत जाती है। उस पर उसका मन ललच गया। दुकान में उस महिला ने साड़ी देखी इसमें कोई आपत्ति नहीं। आपत्ति केवल इस बात के लिए है कि वह उस साड़ी के प्रति मोहासक्त हो गई। साड़ी को देखना और साड़ी का पसन्द आ जाना डिस्चार्ज मोह है। किन्तु

वह औरत उस साड़ी में कुछ इस तरह तदाकार हुई कि जो मोह डिस्चार्ज होने लगा था वह पुनः चार्ज होने लगा। उस महिला की यह तदाकारता भी साड़ी के बराबर है। साड़ी तीन मीटर की है तो वह भी साढ़े तीन मीटर लम्बी हो जाए। उसी में उसकी आत्मा रमा करती है। घर लौट आने के बाद भी उस महिला का मन बाजार में ही उसी साड़ी में उलझा हुआ है। उसका पति उसको उदास देखकर बार–बार पूछता है कि क्यों उदास हो? उस व्यक्ति को क्या मालूम है कि यह महिला जिसका मन साड़ी में रमा है। वह केवल शरीर मात्र है। उसका मन तो कहीं अन्यत्र है। इसी को चार्ज मोह कहा जाता है।

बढ़िया से बढ़िया स्वादिष्ट पकौड़ा और जायकेदार भोजन करने में कोई आपत्ति नहीं है, किन्तु मन में उसको बसा लेना चार्ज होना है। इसी को मोह चार्ज कहते हैं। व्यक्ति कोई उद्योग–धन्धा करता है तो वह डिस्चार्ज हो रहा है। पहले जो चार्ज किया उसकी परिणत स्वरूप उद्योग–धन्धा शुरू किया और तभी से डिस्चार्ज प्रारम्भ हो गया। उसमें तदाकार हो जाना चार्ज होना है। जन्म से लेकर मृत्यु तक मानव चार्ज–डिस्चार्ज होता रहता है। आज का मनुष्यत्व डिस्चार्ज है। पिछले जन्म में जो मनुष्यत्व चार्ज किया था वह अत डिस्चार्ज हो रहा है। दादा भगवान ने चार्ज और डिस्चार्ज का सिद्धान्त दिया है। डिस्चार्ज के प्रति दादा भगवान को भी कोई आपत्ति नहीं है। किन्तु डिस्चार्ज के समय मन कहां केन्द्रित है, महत्त्व इसीका है।

मन्दिर में जब हम पूजा करने के लिए जाते हैं तो वहां भगवान का दर्शन करते हैं। वहां पर हृदय के कैमरे से भगवान का चित्र खींचकर मन को चार्ज कर लेते हैं। पानी पी लिया तो पानी से मैंने अपने शरीर को चार्ज कर लिया। उस पानी को यूरिन के रूप में उत्सर्जन करके उसका डिस्चार्ज कर दिया। मनुष्य शरीर के किसी हिस्से को खुजलाता है तो यह भी डिस्चार्ज है क्योंकि उसमें उसे आन्दानुभूति होती है। देह की समस्त स्थूल क्रियाएं डिस्चार्ज स्वरूप है। इन क्रियाओं में न कोई आनन्द की बात है और न कोई शोक की बात। जो आनन्द की अनुभूति होती है वह प्रतिष्ठित आत्मा को होती है। उसकी ज्ञाता तो शुद्धात्मा है।

डिस्चार्ज मोह खर्च हो रहा है। हम पुनः अगले जन्म के लिए चार्ज कर लेते हैं। चार्ज करने के प्रयास में ही हमारी अज्ञानता है। मनुष्य को अपने हित–अहित का ज्ञान न होने से वह करना

कुछ चाहता है परन्तु कुछ और हो जाता है। जहां निन्दा स्तुति हो रही हो वहां से मन, वचन और काया को हटा लेना चाहिए। लोक निन्दा या, लोक अमान्य बातों में मन को नहीं लगाना चाहिए। चार्ज हो जाने के बाद डिस्चार्ज तो होगा ही उसमें भगवान की भी सत्ता नहीं रहती। डिस्चार्ज में तो बैटरी जैसी चार्ज हुई होगी वैसे ही परिणाम देगी। प्रत्येक वस्तु डिस्चार्ज में बड़े आकार प्रकार में हो जाती है धीरे–धीरे कम होती है। क्रोध पहले हाई डिग्री पर पहुंच जाता है। धीरे–धीरे उसका पारा क्षीण होता है। चार्ज और डिस्चार्ज की क्रिया जीवनभर चलती रहती है।